

नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ सुवर्णं चतुर्था
श्रुयते ॥ सुगन्धं चतुर्था श्रुयते ॥
सुगन्धं चतुर्था श्रुयते ॥ सुगन्धं चतुर्था
श्रुयते ॥ सुगन्धं चतुर्था श्रुयते ॥
सुगन्धं चतुर्था श्रुयते ॥ सुगन्धं चतुर्था
श्रुयते ॥ सुगन्धं चतुर्था श्रुयते ॥

वनेश्वागविनागइयिमाभनिषर्कः
श्याम्भविमुखनाश्चननप्रमूषद्वय
दहहवनशीयोगाम्बनश्चनमाभिरु
॥ ॐ ॥ नागवसक्त ॥ अट्टसिक्कसूमशक्ति
मनिमकूटविहविना ॥ ॐ ॥ नाड

ननाचउज्जानदविनासयिज्जला ॥ ॥
नपादर्मनाश्चसुआलिङ्गयज्जयमहास
वउड्डिमेरुवसयकनाश्चस्यनिहकयज्ज
॥ मानवउचदर्यः निषिलहकैविप्रहर्क
गगशविनासयि ॥ ॐ ॥ नागविनास ॥ उ

धननइकाश्चनंसहस्रमककासुत्रालिगाः
मनहवनिमकत्रियाश्चूषयनिनऊनभाक
चमयुलमधगगाश्चनूषामुननसस्यव
धजालिगयप्रमिनिहकाश्चयसूननन
गमाउक्रियवनपयियुनहकाश्चऊ

गिल

ममिच्यंनमिगा ॥ ६०३ ॥ नागवदयि ॥ चक्रिक्
लाचकमवलउषिगः प्रीयनोडनवसिलमालाश्च
चक्रिचक्रीलथियाहस्रविहयिगः गगयकनीनिवन्ध
नाया ॥ ५५ ॥ प्रहसमिहचवनः मान्कालानाः यूग्यना
पश्रीमवललाया ॥ ५६ ॥ वज्रकनोटकहाथधनियाः क

स्वक्रिया उखडाह २ स हू कथा गिनिः कमल विहगु (गत्र महा
सूषम निप्रभाद ॥ ॥ वज्रवा नाहि आ लिङ्ग य सम्य वः ३
ऊह यन वज्र घ घ व न र का लिहा ये न व या दा ह न माः दि गं वि
दि गं वि का का म्मा दि ऊ म्मा कि मो दि वि ॥ ॥ श्री वज्र द वि न
वन प्रभाद ग न ए न्मि त्वं ग न धा नि या र ग व नि न ह व ज्ज

नि मा ऊ न्म ज्ज न्म गी स म्ब ल त न्म मा ६ ३ ॥ ॥ ग ग न म क वि
हू हू हू हू व न्म स मा न न नू २ हू य आ लिङ्ग य यो ग व न्म ॥ ॥ ॥
हू व ज्ज उ म्मा न न हू हू २ न न न न हू हू ॥ ॥ ॥ सू न न व वि
न व न न व नू २ कू स मा वि ल य न द हू व न्म ॥ ॥ ॥ हा व यि वि
म कू ठ वि न्म य उ ड क क यि २ न मा हू न्म हू व ज्ज उ म्मा न न

६ ३ ॥ ॥



पु. गु. क. ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आत्मकं कुरुग वा नयात नमस्का नयाय ॥ नञ्चार्थः ॥ थगुरु कनः
जय्य धा लसा ॥ ॐ यत् २ महायथे स्वपक्षयथ्य संत वयथा रु वप
या हवि न न सा ह ॥ ॥ पूर्वा मा न रु या अवि प्रा क म ॥ ॥
ॐ आः ॐ वं वं आ द क हं स्वा हा ॥ ॥ वं का वं वि क ल ग व स ध
नयाय ॥ ॥ अथ हि मा न सा ये न सा यि ता सर्व त थ ग त न थ हं स्वा

[illegible]

मलि धनि वरिजिनि महायति स भवद्वार सर्वसत्त्वना भद्रं हं रु
 स्वाहा ॥ अथ नि स च याम रु न धा उ मिल स आत्मा न दान धा
 न जति त ख रु ख न सा रु सि द्ध न ति य वी ॥ दानं गम मयं
 न च स रि रु गी ॥ लख स रि रु गं व म य न व ति ला ॥ ॥ सि लं ३
 मा रु नी ॥ सि ल स मा न व यू य ॥ क्षा तिः ३ दु र्द वि यी ३

सिद्धादयः ॥ स्यान्निर्वादिः केयनगराणां च ॥ ॥

तं ॥ पञ्चाङ्गमन्त्रिभ्यां धर्मयाय ॥ धर्मनः

वर्त्म ॥ ॥ चक्रवर्त्तनध्यानाय ॥ ॥

॥ ॥ लखावातलाय उक्ता लाङ्गिणि ॥ ॥

प्रवृत्तलक्षणकुत्तामन्त्रिमन्त्र ॥ ॥ धर्म

नाष्टः मन्त्रिमन्त्रलदयः ॥ ॥ रुवर्तु

वाग्विनिमूर्त्तः ॥ ॥ सुवर्त्तुधिगुण

वाग्विनिमूर्त्तः ॥ ॥ सुवर्त्तुधिगुण

॥ देवमन्त्रसमस्तमन्त्रसमस्तमन्त्र

॥ धर्मनकासमस्तमन्त्रसमस्तमन्त्र